00494

श्री जी संस्कार पब्लिक स्कूल

पंकज उपाध्याय
डायरेक्टर

विवर्णिका | PROSPECTUS

Scanned by CamScanner

भूमिका

आज भारत का परमाणु संपन्न देश बनकर उभरना अत्यधिक गौरव की बात है। औद्योगिक उत्थान और सैन्य क्षमता का विकास भारत की उल्लेखनीय उपलब्धियां हैं, परंतु फिर भी स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् [illegible] तक जो विकास के परिणाम अपेक्षित थे वे नहीं आ सके। इसका प्रमुख कारण है मानवीय मूल्यों का ह्रास, भौतिकवादी की सतत् अवहेलना तथा सामान्य-जन का चारित्रिक पतन। इन समस्याओं का समाधान केवल शिक्षा से ही संभव है, क्योंकि सांस्कृतिक ह्रास राष्ट्र के ह्रास का मूल है। अतः देश को आवश्यकता है ऐसे विद्यालयों के स्थापना करने की [illegible], स्वदेशी सांस्कृतिक आदर्शों के ज्ञान के साथ बालक-बालिकाओं में अपने महापुरूषों, उनकी कृतियों एवं परंपरा के प्रति गौरव एवं स्वाभिमान के भाव जागृत किए जा सकें। अतः इस दृष्टिकोण को सामने रखते हुए प्राचीन गुरुकुल पद्धति का आधार नवीन परिवेश में अभिनव प्रयोग सहित राष्ट्र निर्माण हेतु नवीन सुसंस्कारित एवं चरित्र-संपन्न पीढ़ी के सृजन का प्रारंभ किया गया।

बच्चों को पुरस्कृत करते ए०आर०टी०ओ० महेश शर्मा

बच्चों को पुरस्कृत करती प्रधानाचार्या

सरस्वती पूजन में सम्मिलित छात्र

विद्यालय की विशेषताएं

- सांस्कारिक एवं शुद्ध वातावरण।
- सुयोग्य, अनुभवी एवं सांस्कारिक शिक्षकों/शिक्षिकाओं द्वारा शिक्षण।
- विद्यालय के छात्र-छात्राओं की बोर्ड परिक्षाओं में श्रेष्ठ परिणाम।
- निर्धारित, नियमित गृह कार्य की व्यवस्था।
- छात्र/छात्राओं के सर्वांगीण मूल्यांकन हेतु "Continuous and Comprehensive Evaluation" सतत् मूल्यांकन पद्धति।
- स्वाध्याय हेतु एक वृहद् पुस्तकालय एवं वाचनालय।
- क्रिया आधारित शिक्षा पर बल।
- लेखन प्रतिभा के विकास हेतु छात्र/छात्राओं द्वारा हस्त लिखित पत्रिका सम्पादित करने की व्यवस्था।
- छात्रों की अंतः क्रियाओं एवं सद्वृत्तियों के विकास हेतु देश-दर्शन यात्राएं।
- भौगोलिक एवं ऐतिहासिक ज्ञानार्जन हेतु दर्शन यात्राएं।
- अपनी मातृभूमि, संस्कृति, धर्म, एवं महापुरूषों से सम्बंधित ज्ञान प्राप्ति हेतु "संस्कृति ज्ञान परीक्षा" का आयोजन।
- शारीरिक, योग एवं संगीत शिक्षा की उचित व्यवस्था।
- छात्र/छात्राओं के समुचित विकास की जानकारी हेतु आचार्य एवं अभिभावकों की मासिक गोष्ठियां।
- विद्यालय की प्रबंध समीति में शिक्षाविद्, अभिभावकों, समाज सेवी व्यक्तियों तथा आचार्यो का प्रतिनिधित्व।
- छात्रों में अनुशासन, स्वाभिमान, देश-भक्ति आदि भावों के जागरण हेतु छात्र शिविरों का आयोजन।

Scanned by CamScanner

अनुशासनात्मक नियम

- विद्यालय के समस्त नियमों, उपनियमों का पालन करना अनुशासन की दृष्टि से छात्र-छात्राओं के जीवन का अनिवार्य अंग है ऐसा न होने पर छात्र-छात्रा का नाम विद्यालय से पृथक किया जा सकता है।
- लगातार सात दिनों तक बिना सूचना के अनुपस्थित रहने पर छात्र-छात्रा का नाम विद्यालय से पृथक कर दिया जायेगा।
- प्रत्येक छात्र-छात्रा की विद्यालय उपस्थिति प्रत्येक मासिक परीक्षा में 80 प्रतिशत होनी आवश्यक है।
- छात्र/छात्रा के अनुपस्थित रहने पर अवकाश का प्रार्थना पत्र एक दिवस पूर्व अथवा अवकाश के दिवस ही कक्षाचार्य के पास आ जाना चाहिए, अन्यथा छात्र/छात्रा को अनुपस्थित कर दिया जायेगा।
- किसी भी अभिभावक को अभिभावक-दिवस के अतिरिक्त किसी भी दिवस में आचार्य से सीधे कक्षा में जाकर सम्पर्क करनें नही दिया जायेगा।
- अभिभावक-दिवस के अतिरिक्त छात्र-छात्राओं से सम्बन्धित समस्या का निराकरण प्रधानाचार्य से विद्यालय दिवसों में प्रातः 8 बजे से 11 बजे तक कर सकते है।
- विद्यालय में आयोजित होने वाले सभी कार्यकमों में छात्र-छात्रा की उपस्थिति अनिवार्य है, अन्यथा छात्र/छात्रा को आर्थिक दण्ड अथवा अनुशासनात्मक कार्यवाही का सामना करना पड़ सकता है।
- सभी परीक्षार्थी का विद्यालय द्वारा आयोजित मासिक अर्द्धवार्षिक व पूर्वानुमासिक परीक्षा में प्रत्येक विषय में उत्तीर्ण होना अनिवार्य है।

आचार्य

नियमित व्यायाम एवं प्राणायाम, अन्तवार्हय स्वच्छता एवं पवित्रता, व्यस्थिता, स्वाध्याय में रूचि, वाणी की मधुरता, निःस्वार्थ भाव, स्वदेश और स्वभाषा के प्रति श्रद्धा, कर्तव्यपरायणता व बालक-बालिकाओं, सहयोगियों, अभिभावकों तथा समाज के प्रति आत्मीयता, मातृभूमि के प्रति निष्ठा ही आचार्य के श्रेष्ठता की कसौटी है।

शिक्षा

हमें तो ऐसी शिक्षा चाहिए जिसमें चरित्र बनें, बुद्धि का विकास हो और जिससे मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सकें। हमें आवश्यकता इस बात की है कि हम विदेशी प्रभाव से स्वतंत्र रहकर अपने नीजि ज्ञान भंडार की विभिन्न शाखाओं का और उसके साथ ही विदेशी भाषाओं और पाश्चात्य विज्ञान का अध्ययन करें। हमें यान्त्रिक और ऐसी सभी भाषाओं की आवश्यकता है जिनसे उद्योग-धन्धों की वृद्धि और आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्याप्त कमाई हो सकें और आपत्तिकाल के लिए संचय भी कर सकें।

श्री जी संस्कार स्टाफ

फैंसी ड्रैस प्रतिभागी

राष्ट्रीय पर्व पर कार्यक्रम प्रस्तुत करते छात्र

Scanned by CamScanner

प्रतियोगिता में पुरस्कार देते ए०आर०टी०ओ० महेश शर्मा

बाल दिवस पर नन्हे-मुन्ने बच्चे

स्वतंत्रता दिवस पर [illegible]

विद्यालय का लक्ष्य

इस प्रकार की राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का विकास करना है जिसके द्वारा ऐसे प्राणी का निर्माण हो सकें जो हिन्दुत्व निष्ठ एवं राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत हो एवं शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से पूर्ण विकसित हो तथा जन-जीवन की वर्तमान चुनौतियों का सामना सफलतापूर्वक कर सकें और उसका जीवन ग्रामीण वनवासी, गिरी-कन्दराओं एवं झुग्गी-झोपडियों में निवास करने वाले दीन-दुःखी अभावग्रस्त अपने बन्धुओं को सामाजिक कुरीतियों, शोषण एवं अन्याय से मुक्त कराकर राष्ट्रजीवन को समरम, सुसम्पन्न एवं सुसंस्कृत बनाने के लिए समर्पित हो।

गणतंत्र दिवस पर गीत गाते छात्र

खेल-क्रीडा में भाग लेते बच्चे

गणतंत्र दिवस पर वन्देमातरम गाती छात्राएं

विद्यालय शिक्षा

विद्यालय ईट और गारे की बनी हुई इमारत नही है, जिसमें विभिन्न प्रकार के छात्र और शिक्षक होते है। विद्यालय बाजार नही है, जहां विभिन्न योग्यताओं वाले अनिच्छुक व्यक्तियों को ज्ञान प्रदान किया जाता है। विद्यालय रेल का प्लेटफार्म नही है, जहां विभिन्न उद्देश्य से विभिन्न व्यक्तियों की भीड जमा होती है। विद्यालय आध्यात्मिक संगठन है जिसका अपना स्वयं का विशिष्ठ व्यक्तित्व है, विद्यालय गतिशील सामुदायिक केन्द्र है जो चारों ओर जीवन और शक्ति का संचार करता है। विद्यालय एक आश्चर्यजनक भवन है जिसका आधार सद्भावना है।

सारांश में-

"विद्यालय एक पवित्र मंदिर है, एक सामाजिक केन्द्र लघु रूप में राज्य और मनमोहक वृन्दावन है जिसमें सभी बातों का मिश्रण होता है।"

SHRI JEE SANSKAR PUBLIC SCHOOL

Run and Established By Bhagwati Charitable Trust Reg. Delhi Under 80G
Address : Sadarpur Colony, Sector-45, Noida, UP (201 301)
Ph : 0120-2500286, Mob: 9868031328, Email : shrijee2010@gmail.com

Scanned by CamScanner